भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लए ०८-१४ अगस्त, २०१६ साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबं धत राज्यों के राज्य कृषि व कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर कया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

माह	२८ जुलाई - ०३ अगस्त	वास्त वक वर्षा (ममी) अगस्त, १६							मौसम वभाग संभा वत वर्षा (ममी) अगस्त, १६				
पंजाब													
भटिंडा	4.5	2.5	0	0	0	28	0	0	4	5	3	7	7
फरोजपुर	0	0	0	0	0	0	1	0	4	5	3	7	7
मुकतसर	11	11	0	0	0	0	0	0	4	5	3	7	7
मानसा	0	0	0	0	0	0	0	17	0	0	10	17	9
हरियाणा													
सरसा	0	0	0	1	0	8	0	0	0	0	11	30	11
हिसार	28	0	0	3	0	0	0	0	0	0	41	33	11
फ़तेहाबाद	20	12	3	0	0	0	0	0	0	0	21	22	10
राजस्थान													
हनुमानगढ़	1.4	0	0	3	0	1	0	0					
श्रीगंगानगर	29	0	6	1	1	0	14	3					
बांसवाड़ा	96	19	61	5	4	10	33	52					

सलाह

फसल पुष्पन अवस्था में है | रस चूषक कीटों में सफेद मक्खी प्रबल नाशीकीट है| सफेद मक्खी की औसत संख्या प्रति पत्ती गोनियाना गाँव में 3.56 ; मलौत में 4.4 ; भागू (मुक्तसर) में 3.9 ; खारा में अजीत गल में 3.0 ; सेडा सह वाला में 4.17 तथा लंबवाली (फरीदकोट) में 4.97 दर्ज कया गया| जै सड की संख्या सभी स्थलों पर 3 से 6 प्रति पत्ती के मध्य दर्ज की गई | कपास पर्णकुंचन रोग ग्रेड-I से ग्रेड-III के मध्य रहा| कपास के जीवाणु शीर्णता रोग का प्रकोप देखा गया है| ऊपरी फासलाच्छादन में सफेद मक्खी की संख्या 06/पत्ती पहुँचने पर रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग करें | जै सड का प्रबंधन सावधानी से पारिस्थितिकी को हानि पहुंचाए बिना करें | पंजाब कृ ष वश्व वद्यालय की सफारिशों के अनुसार आकस्मिक मुरझान (पैरा वल्ट) का प्रबंधन कोबाल्ट-क्लोराइड के 10पीपीएम (10 मग्रा./ली. पानी) के घोल से प्रभा वत पौधों की जड़ को मुरझान के लक्षण दिखाई देने के कुछ घंटों के अंदर ही तर करें | पत्ती-धब्बा अथवा शीर्णता का नियंत्रण करने के लए फसल पर ब्लाइटॉक्स 500ग्रा. + एग्रीमाइ सन 20ग्रा. अथवा स्ट्रैप्टोमाइ सन ग्रा/एकड़ की दर से 15 से 20 दिनों के अंतराल पर वर्षा रुकने के तुरन्त बाद करें|

उड़ीसा													
कोरापुट	138	43	22	41	33	28	4	1	6	0	7	21	6
कालाहांडी	32	3	37	71	28	4	17	0	3	0	6	10	5
बोलांगीर	32	4	16	45	37	16	2	6	5	0	3	9	9
गुजरात													
अमरेली	50	1	1	35	9	2	3	13	30	9	0	0	0
भावनगर	78	0	1	22	3	1	2	5	25	6	0	0	0
जामनगर	88	1	3	83	##	30	23	5	37	0	0	0	0
राजकोट	75	1	0	20	75	8	4	9	46	7	0	0	0
भरूच	44	1	2	2	12	12	8	8	24	27	0	0	0
सबरकांठा	70	11	24	17	1	3	12	31	##	44	10	0	0
सुरेन्द्रनगर	11	0	0	3	16	2	2	1	33	11	0	0	0
अहमदाबाद	32	0	6	27	9	3	8	7	46	17	0	0	0
वडोदरा	114	17	6	2	10	15	13	21	0	0	0	0	0
पाटन	21	0	23	28	9	8	5	2	40	24	0	0	0
मेहसाना	48	1	7	9	2	10	7	13	61	25	0	0	0
मध्यप्रदेश													
खरगोन	54	8	17	1	2	18	9	9	0	5	7	4	0
धार	72	10	23	1	3	26	10	9	4	13	12	3	0
खंडवा	101	21	45	1	4	51	4	4	3	7	10	5	0

बुआई का कार्य समाप्त हो चुका है । उर्वरकों का मृदा में अनुप्रयोग तथा पौधों पर म ी चढ़ाने का कार्य कया गया है। हरी खाद के लए लए फसल 40 से 45 दिनों की होने पर दो कतारों के बीच बोई गई सनई को पौधों पर म ी चढ़ाते समय ही म ी में मला दें। कसानों को कसानों को सलाह दी जाती है क निराई का कार्य करें तथा रस चूषक कीटों के प्रकोप को कम करने के लए नीम तेल का @3 मली/ली पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें ।

गुजरात में 08 अगस्त , 2016 तक वगत वर्ष के 28 से 29 लाख हेक्टर क्षेत्रफल के मुक़ाबले 22.81 लाख हेक्टर में कपास की बुआई हुई। वगत सप्ताह कपास उत्पादक राज्यों में अच्छी वर्षा हुई है । जूनागढ़, अमरेली, राजकोट, भावनगर, भडौंच तथा अहमदाबाद में अगेती बोई गई फसल के फूलों में गुलाबी सूँडी का प्रकोप दर्ज कया गया है। इस सूँडी के मॉनीटरिंग के लए 4-5 फीरोमोन ट्रैप/हे की दर से फसल में तुरन्त स्था पत करें । पतंगों की संख्या 8 प्रति ट्रैप प्रति रात्रि सतत 3 रातों तक आने पर बड़े पैमाने पर अर्थात 40 फीरोमोन ट्रैप/एकड़ अथवा 10 से 20 प्रकाश ट्रैप/एकड़ प्रयोग करें । यदि ट्रैप उपलब्ध नहीं हैं तो 8 पतंग प्रति ट्रैप सतत 3 रातों तक पकड़ में आने की आ र्थक हानि सीमा पर पहुँचने पर साइपरमो थ्रन का छिड़काव करें।

फसल 30 से 65 दिनों के मध्य है । सभी कपास उत्पादक क्षेत्रों में रुक-रुक कर वर्षा हुई है । वर्षा तथा धूप एकांतर में आने से कपास की वृ द्ध तथा वकास में मदद मली है । नत्रयुक्त उर्वरक का 38 कग्रा./हे+फॉसस्फोरस 20-30 कग्रा./ हे.+पोटाश 10-20 कग्रा./हे. उर्वरकों के मृदा अनुप्रयोग की सफारिश की जाती है। रस चूषक कीट कीट वशेषत: जै सड तथा सफेद मक्खी की उपस्थिति लगभग सभी क्षेत्रों में देखी गई है । भाकृअनुप-सीआईसीआर की वेब पेज पर

														परामर्शी वर्ष 2016-17 के अनुसार सफारिशों के सम्पूर्ण पॅकेज को प्रबंधन हस्तक्षेप के रूप में कसानों को अपनाने की सलाह दी जाती है। रोगों का कोई प्रकोप दर्ज नहीं कया गया है।
महाराष्ट्र														नांदूरबार, धुले तथा औरंगाबाद जिलों में मई-जून में बोई गई फसल के फूलों में गुलाबी सूँडी की हानि दर्ज की गई है । नांदूरबार जिले के 50% से भी अधक क्षेत्रफल में कपास पछेती बोई गई है । अगस्त तथा इससे आगे के महीनों में इस सूँडी की निगरानी के लए फसल में सावधानीपूर्वक फीरोमोन ट्रैप स्थापत करें । मध्य महाराष्ट्र में वशेषत: संचत कपास में गुलाबी सूँडी की मॉनीटरिंग के लए फीरोमोन ट्रैप 4-5/हे की दर से स्थापत करें । यदि पतंगों की संख्या 08 प्रति रात्रि प्रति ट्रैप सतत 3 रात्रियों में पकड़ में आते हैं तो 40 फीरोमोन ट्रैप प्रति एकड़ की दर से अथवा 10 से 20 प्रकाश ट्रैप प्रति एकड़ बड़े पैमाने पर पतंग पकड़ने के लए फसल में स्थापत करें । ट्रैप उपलब्ध न होने पर पतंगों की संख्या 8 प्रति ट्रैप/रात्रि सतत 3 रातों में की आर्थक हानि स्तर पर पहुँचने पर साईपरमेथ्रन का एक छिड़काव करें। यूरिया के अधक मात्रा में प्रयोग करने से जैसड का प्रकोप बढ़ेगा । राज्य में अभी तक कसी नाशीकीट अथवा रोग का प्रकोप रिपोर्ट नहीं कया गया है । वर्षा पूर्व बोई गई अथवा बारानी फसल में अंत:सस्य क्रयाएँ पूरा करें । नत्र का मृदा अनुप्रयोग @60 कग्रा./हे बुआई के 60 दिनों पश्चात संचत फसल में तथा बारानी फसल में 36 कग्रा/हे की दर से बुआई के 30 दिनों पश्चात पौधे के चारों ओर रिंग बनाकर अथवा गड्ढा बनाकर दें । बारानी कपास में फसल वरलीकरण कार्य पूरा करें। खरपतवार प्रबंधन हाथ से निराई करके अथवा अंकुरण-पश्चात खरपतवारनाशक अनुप्रयोग भाकृअनुप-सीआईसीआर परामर्शी 'कपास स्वास्थ्य प्रबंधन युक्तियाँ-2016-17' की सफारिशों के अनुसार करें । कुछ संचत खेतों में आकस्मिक मुरझान जैसे लक्षण देखे गए हैं।
धुले	17	7	0	0	19	1	13	12	9	11	5	0	0	
नांदूरबार	60	8	9	9	29	8	10	27	8	11	3	0	0	
जलगांव	52	13	8	0	12	7	7	4	4	7	12	7	0	
अहमदनगर	65	34	7	1	4	2	0	1	8	9	7	10	10	
औरंगाबाद	63	40	4	1	16	0	0	0	5	6	6	6	4	
जालना	56	11	2	0	9	0	0	0	0	0	0	0	0	
बीड़	35	3	4	1	1	0	0	0	0	0	0	0	0	
नांदेड़	103	21	6	2	1	3	1	2	0	0	0	0	0	
परभणी	81	6	4	2	2	0	0	0	0	0	0	0	0	
हिंगोली	80	4	8	2	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
बुलढाना	79	11	12	2	4	5	0	2	2	3	3	3	1	
अकोला	76	17	18	0	1	14	2	3	1	2	2	1	0	
वाशम	90	14	5	1	12	4	3	7	1	0	0	0	0	
अमरावती	72	17	11	5	10	16	3	3	2	2	1	3	2	
यवतमाल	82	13	6	6	3	14	6	5	1	0	1	0	2	
वर्धा	103	11	7	5	9	5	1	8	0	0	0	1	2	
नागपुर	72	20	3	2	18	13	1	2	0	1	2	1	3	
चन्द्रपुर	80	11	2	18	7	17	5	1	0	0	2	1	4	

तेलंगाना													महबूबनगर तथा नालगोंडा जिलों में वर्षा का वतरण असंतोषजनक तथा असमान रहा। दूसरे कपास उत्पादक जिलों में पर्याप्त वर्षा हुई है। वारंगल , खम्म म, महबूबनगर तथा नालगोंडा जिलों में नमी संरक्षण उपाय करने की पुरजोर सफारिश की जाती है। राज्य के कसी भी हिस्से से नाशीकीटों तथा रोगों का प्रकोप दर्ज नहीं कया गया है। इस समय कहीं भी कीटनाशकों के प्रयोग की आवश्यकता नहीं है।
आदिलाबाद	68	23	23	1	6	4	0	0	0	0	0	5	0
वारंगल	52	24	29	0	0	1	0	0	0	0	0	5	0
खम्मन	54	19	33	1	2	6	0	0	0	0	3	3	2
कारिंगर	78	22	23	2	12	3	0	0	0	0	0	5	0
नालगोंडा	39	1	4	0	0	0	0	0	0	0	2	6	3
महबूबनगर	48	1	2	2	1	1	0	0	0	0	0	6	5
आंध्रप्रदेश													फसल पौद तथा लघु क लकायन अवस्था में है । अगेती बोई गई फसल में नत्र तथा पोटाश की वखण्डित मात्रा दी जा सकती है । खरपतवारों के नियंत्रण के लए अंत:सस्य क्रयाएँ तथा नमी संरक्षण के उपाय कए जा सकते हैं । सामान्य रूप से रस चूषक कीटों का प्रकोप नहीं देखा गया है । यद्य प फूलकीट(थ्रप्स) का प्रकोप आ र्थक हानि सीमा स्तर से कम दर्ज कया गया है । रोगों का प्रकोप फसल पर नहीं है । व भन्न बीटी कपास संकरों में दैहिकीय कारणों से पत्तियों का लाल होना रिपोर्ट कया गया। पोषक तत्वों की क मी को पूरा करने के लए फसल में नत्र तथा पोटाश उर्वरकों का पहला मृदा अनुप्रयोग वर्षा होने/पर्याप्त नमी होने पर कया जा सकता है । फसल की आयु के अनुसार 5 से 7 दिनों के अंतराल पर पौधों को सामान्य स्थिति में लाने के लए 1-2% यूरिया+1% मेग्नी शयम सल्फेट अथवा 1 से 2% पोटे शयम नाइट्रेट(मल्टी-पोटाश) + 1% मेग्नी शयम सल्फेट अथवा 1-2% डीएपी + 1% मेग्नी शयम सल्फेट का फसल पर छिड़काव करें ।
गुन्टूर	36	0	2	1	0	0	0	0	0	0	0	0	3
प्रकासम	16	0	0	0	0	0	0	1	0	0	3	4	8
कर्नाटक													बुआई की तारीख के अनुसार फसल इस समय प्रारं भक क लकायन तथा पुष्प-कली की प्रारं भक अवस्था (पहले बनी फलन शाखाओं में) में है । बेलागवी जिले के कुछ हिस्सों में लगातार तथा सघन वर्षा रिपोर्ट की गई है । कपास उत्पादक क्षेत्रों के कई हिस्सों में पौध-वरलीकरण, पहली अंत:सस्य क्रया तथा हस्त निराई का कार्य पूरा हो
धारवाड़	31	2	8	9	6	6	2	3	2	5	3	3	5
हवेरी	24	3	5	8	2	5	2	2	5	3	8	5	8
मैसूर	46	0	0	2	0	2	0	0	2	3	3	3	3

														हो चुका है । रस चूषक कीटों के लए फसल सुरक्षा उपायों के साथ पानी में घुलनशील 19:19:19 उर्वरक का फसल पर छिड़काव करें । जहां हस्त निराई संभव न हो तो सफ़ारिशों के अनुसार अंकुरण पश्चात खरपतवारनाशक का अनुप्रयोग करें । कपास की फसल पर खरपतवारनाशक के छिड़काव का अपसरण न हो इस बात की सावधानी बरतें । हवेरी, बेलगाम तथा धारवाड़ जिलों के अ धकांश कपास उत्पादक क्षेत्रों में रस चूषक कीटों तथा प्ररोह घुन का प्रकोप वद्यमान है। प्रभावी नियंत्रण के लए कपास मैन्यूअल का संदर्भ देखें इस सप्ताह के बाद कपास उत्पादक क्षेत्र के कसी भी हिस्से में बीटी कपास की बुआई न करें । गडग, धारवाड़ तथा हवेरी जिलों के कुछ हिस्सों में प्याज तथा मर्च की फसलों के मध्य अंत:फसल के रूप में देसी कपास की उन्नत क़स्मों की बुआई की जा सकती है।
ता मलनाडु														कपास बुआई का कार्य चल रहा है । बोई गई फसल पौद अवस्था में है । नाशीकीटों व रोगों का प्रकोप नहीं है।
पेरंबलुर	66	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
सलेम	50	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
त्रिची	33	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
वरडुनगर	18	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	

आदर्श वर्षा					
वर्षा म.मी.	<5	5-20	21-50	50-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

डा. के.आर. क्रांति, डा. ए. एच. प्रकाश, डा. संध्या क्रांति, डा. डी. मौंगा, डा. ब्लेज़ डी-सूजा, डा. एस. बी. संह, डा. संगनधूपे, डा.एम.वी. वेणुगोपालन, डा. इसाबेला अग्रवाल, डा. एम.सबेस, डा. वश्लेष नगरारे, डा. ऋ ष कुमार, डा. एन अनुराधा नराला, डा. दीपक नगराले, श्रीमति संगीता औरंगाबादकर एवं कु. स चता एलेकर

हिन्दी संसकरण: डॉ. उल्हास नंदनकर, मुख्य तकनीकी अ धकारी एवं प्रभारी, हिन्दी अनुभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)